Paper I

General Psychology

1 ... Singh.
Dept of Psychology
Mahila College Dalmianagar
Dehri

MJC Sem. I
6.11.2025

सीखना
Conditioning theory of learning

सीखने के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों के द्वारा अनेकों सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। जिसमें सीखने के अनुकूलन के सिद्धांत का प्रतिपादन रूसी मनोवैज्ञानिक PAVLOV ने किया है जिसका सीखने के क्षेत्र में अति० महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने सीखने की व्याख्या सम्बन्ध प्रत्यावर्तन के आधार पर की है। इस सम्बन्ध में इन्होंने बतलाया है कि जब कोई अनुबंधित उत्तेजना स्वभाविक उत्तेजना के साथ आता है तो व्यक्ति अनुबंधित उत्तेजना के प्रति भी स्वभाविक प्रतिक्रिया करने लगता है जिसे PAVLOV ने Conditioning कहा है। इसलिए इस सिद्धांत को classical Conditioning theory भी कहा जाता है।

इस सिद्धांत के सम्बन्ध में Pavlov का कहना है कि किसी अस्वभाविक उत्तेजना के साथ प्राणी जब स्वभाविक प्रतिक्रिया करता है तो उसे सम्बन्ध प्रत्यावर्तन कहा जाता है। किसी भी प्रकार के शिक्षण में साहचर्य देखने को मिलता है जिसके कारण प्राणी के सामने जब भी कोई उत्तेजना या उत्तेजक परिस्थिति प्रस्तुत किया जाता है तो प्राणी ठीक उसी तरह का प्रतिक्रिया व्यक्त

(2)

करता है जैसा की वह उस उत्तेजना के प्रति प्रशिक्षण या अनुभव द्वारा सीखा रहता है।

Pavlov ने अपने सिद्धान्त के सम्बन्ध में व्याख्या करते हुए कहा है कि प्राणी के सामने जब स्वभाविक उत्तेजना प्रस्तुत की जाती है तो वह स्वभाविक प्रतिक्रिया करता है लेकिन स्वभाविक प्रतिक्रिया करने के स्वाभाविक क्रम में ही कुछ अन्य उत्तेजनाएँ भी मौजूद रहती है जो तटस्थ रहती है और जब यह तटस्थ उत्तेजना किसी स्वभाविक उत्तेजना के साथ एक नियमित क्रम में उपस्थित होती है तब तटस्थ उत्तेजना स्वभाविक उत्तेजना के आने का संकेत देती है जिससे प्राणी उस प्रत्याशीत उत्तेजना के प्रति तैयारी करने में रहता है। अतः प्राणी की स्वभाविक प्रतिक्रिया तटस्थ उत्तेजना के साथ अनुबंधित हो जाती है। इस तरह के अनुबंध को निचे दिये गये तालिका के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

संबंध प्रत्यावर्तन का पहली अवस्था

स्वभाविक उत्तेजना "भोजन"	स्वभाविक प्रतिक्रिया लार टपकना

संबंध प्रत्यावर्तन की दूसरी अवस्था

अस्वभाविक उत्तेजना "घंटी की आवाज" स्वभाविक उत्तेजना (भोजन)	लार टपकना स्वभाविक प्रतिक्रिया

PAVLOV का यह सिद्धांत इनके द्वारा किए गये प्रयोगों पर आधारित है इन्होंने एक कुत्ते को एक कमेरे में रखा। जिसमें बाहर से किसी तरह की आवाज नहीं आती था कुत्ते को भूखा रखा गया। कुत्ते के गले में लार की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक विशेष प्रकार का यंत्र लगा दिया गया था कमरे में घंटी लगा दिया गया। जिसे बाहर से दबाकर बजाया जाता था। इस व्यवस्था के बाद PAVLOV ने अपने प्रयोग को दो अवस्थाओं में किया। प्रयोग की पहली अवस्था में पहले घंटी बजायी जाती थी और उसके कुछ सेकण्ड बाद कुत्ते के सामने भोजन उपस्थित किया जाता था इस अवस्था को कई दिनों तक दुहराया गया। PAVLOV ने अपने प्रयोगों में ~~आरम्भ~~ पाया की जैसे ही घंटी बजायी जाती थी तो प्रारम्भ में कुत्ता चौकने जैसी प्रतिक्रिया करता था और ज्यों ही उसके सामने भोजन लाया जाता था तो कुत्ते के मुँह में लार टपकने लगता था। प्रयोग की दूसरी अवस्था में भोजन प्रस्तुत करने के लगभग 30 सेकण्ड बाद घंटी बजायी जाने लगी। इस दूसरी अवस्था में Pavlov ने यह देखा की कुत्ता घंटी की आवाज होते ही लार टपकाने की प्रतिक्रिया करने लगा।

(4)

इस तरह Pavlov के अपने प्रयोग में पाया की कुत्ते ने प्रयोग की पहली अवस्था में घंटी की आवाज को भोजन प्रस्तुत करने के संकेत के रूप में जाना और उसी के परिणाम स्वरूप होनेवाली घंटी की आवाज के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लिया था या अनुबंधित हो गया था।

Pavlov के प्रयोग से यह भी स्पष्ट होता है कि कुत्ता पहले अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति कोई भी प्रतिक्रिया नही करता था लेकिन जब अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ बार-बार स्वाभाविक उत्तेजना प्रस्तुत किया गया तो कुत्ता स्वाभाविक प्रतिक्रिया करना सीख गया है

Pavlov द्वारा प्रतिपादित classical conditioning theory सीखने की व्याख्या बहुत ही स्पष्ट रूप में करता है लेकिन विद्वानोंने इस सिद्धांत की कड़ी आलोचना भी की है जिसमें कुछ मुख्य निम्नलिखित है

1 इस सिद्धांत के अनुसार सीखने के लिए Reinforcement आवश्यक है लेकिन Tolman (1932) BLODGETT (1929) ने अपने अध्ययनो के आधार पर बतलाया है कि Reinforcement के अभाव में भी प्राणी किसी अनुक्रिया को सीखता है।

(2) PAVLOV का यह सिद्धांत सीखने लिए अभ्यास या पुनरावृत्ति को महत्वपूर्ण माना है लेकिन बहुत सी प्रतिक्रियाएं ऐसी होती है जिन्हे व्यक्ति सिर्फ एक बार के अनुभव के आधार पर सीख लेता है।

(3) कुछ विद्वानों का कहना है कि अनुबंधन द्वारा सीखी गयी अनुक्रिया अस्वभाविक होती है। जिसके आधार पर स्वभाविक रूप से सीखने की व्याख्या नही की जा सकती है।

उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद सीखने के classical conditioning theory एक उपयोगी सिद्धांत है जिसका स्थान बच्चो तथा पशुओं के सीखने मे अनुबंधन की भूमिका सबसे अधिक है।